भारतीय ज्ञान परम्परा

विकसित भारत की संकल्पना 2047

Indian Knowledge System

Concept of Developed India, 2047

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

भारतीय ज्ञान परम्परा

विकसित भारत की संकल्पना 2047

Indian Knowledge System

Concept of Developed India, 2047

सम्पादक
डॉ. प्रभात शुक्ल
डॉ. राहुल कुमार

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस

एल-9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.in

SAMPLE

भारतीय ज्ञान परम्परा : विकसित भारत की संकल्पना 2047

Indian Knowledge System : Concept of Developed India, 2047

Edited by Dr. Prabhat Sukla, Dr. Rahul Kumar

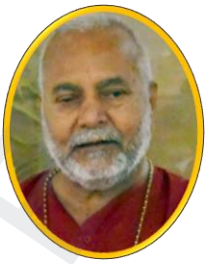
आईएसबीएन : 978-81-19098-58-3
सर्वाधिकार : © सम्पादकगण
संस्करण : प्रथम, 2024, दिसंबर 20

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।



मुख्य अधिष्ठाता, मुमुक्षु शिक्षा संकुल
पूर्व केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री, भारत सरकार
मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर (उ०प्र०) पिन–242226

आशीर्वचन

''भारतीय ज्ञान परम्परा : विकसित भारत की संकल्पना 2047'' शीर्षक पुस्तक भारतीय ज्ञान परम्परा की गहराई और उसकी समकालीन प्रासंगिकता को उजागर करते हुए 2047 तक भारत के विकसित राष्ट्र बनने की परिकल्पना को साकार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

भारतीय ज्ञान परम्परा केवल अतीत का गौरव नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य का पथप्रदर्शक है। यह परम्परा न केवल हमारी संस्कृति और जीवन मूल्यों की आधारशिला है, बल्कि आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की दिशा में मार्गदर्शन का स्रोत भी है। ऐसी पहलें युवाओं और शोधकर्ताओं को हमारी समृद्ध परम्पराओं से जोड़ने और उनके माध्यम से राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य को साकार करने में प्रेरणा देंगी।

डॉ. प्रभात शुक्ल और डॉ. राहुल कुमार के सम्पादन में यह पुस्तक एक संगठित और उत्कृष्ट प्रयास का प्रतीक है। उन्होंने इस ग्रन्थ को विचारशील और पठनीय स्वरूप प्रदान किया है, जो निस्संदेह विद्वानों और समाज के विभिन्न वर्गों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। संगोष्ठी में भाग लेने वाले सभी विद्वानों और लेखकों को भी हार्दिक साधुवाद, जिनके विचार और लेख इस पुस्तक की आत्मा हैं।

ईश्वर से प्रार्थना है कि यह पुस्तक भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण और प्रचार–प्रसार में सफल हो और भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के महान लक्ष्य की ओर एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित हो।

स्वामी चिन्मयानंद
मुख्य अधिष्ठाता

नमूना • SAMPLE



सचिव
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज
स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय
मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर, (उ.प्र.)
पिन – 242226

शुभकामना सन्देश

सम्पादित पुस्तक **''भारतीय ज्ञान परम्परा : विकसित भारत की संकल्पना 2047''** के प्रकाशन पर मैं हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई देता हूँ। इस पुस्तक में भारतीय ज्ञान परम्परा की गहरी समझ और विकसित भारत की दिशा में हमारे सामूहिक प्रयासों का निरूपण किया गया है। 2047 तक आत्मनिर्भर और समृद्ध भारत की कल्पना को साकार करने के लिए यह पुस्तक न केवल हमारे ऐतिहासिक ज्ञान और संस्कृति को पुनः उजागर करती है, बल्कि हमारे भविष्य की संभावनाओं को भी रेखांकित करती है।

इस पुस्तक के माध्यम से हम भारतीय दृष्टिकोण और परम्पराओं से जुड़ी महत्वपूर्ण विचारधाराओं को एक नई दिशा में प्रस्तुत कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक न केवल अकादमिक जगत में बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग में चर्चा और विमर्श को प्रोत्साहित करेगी।

मैं इस पुस्तक के सम्पादक डॉ० प्रभात शुक्ल एवं डॉ० राहुल कुमार को शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ, आशा करता हूँ कि यह पुस्तक भविष्य में विकसित और समृद्ध भारत की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगी।

डॉ० अवनीश कुमार मिश्र

SAMPLE

नमूना • SAMPLE



प्राचार्य
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज
मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर (उ०प्र०), पिन–242226

शुभकामना सन्देश

स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज के प्राचार्य के रूप में मुझे अत्यंत हर्ष है कि **''भारतीय ज्ञान परम्परा : विकसित भारत की संकल्पना 2047''** पर आधारित इस सम्पादित पुस्तक का प्रकाशन हो रहा है। यह पुस्तक भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्व को रेखांकित करती है और हमें हमारे प्राचीन विचारों, शास्त्रों और संस्कृत साहित्य से प्रेरणा लेने का आह्वान करती है। भारतीय ज्ञान परम्परा ने न केवल हमारे समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, बल्कि यह आज भी हमारे सांस्कृतिक और बौद्धिक पहचान को सशक्त बनाती है।

आज जब हम 2047 तक के विकसित भारत की संकल्पना पर विचार कर रहे हैं, तो हमें यह समझना होगा कि भौतिक विकास के साथ–साथ हमें भारतीय मूल्यों और नैतिकता को भी संजोकर रखना है। यह पुस्तक इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके माध्यम से हम भारतीय संस्कृति की गहरी धारा को फिर से जागृत करने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि आने वाली पीढ़ी को इससे प्रेरणा मिल सके।

मैं इस पुस्तक के सम्पादक डॉ० प्रभात शुक्ल एवं डॉ० राहुल कुमार के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ और सभी शोधकर्ताओं, विद्वानों और विद्यार्थियों से अपेक्षा करता हूँ कि वह इस पुस्तक के विचारों को आत्मसात करेंगे तथा हमारी भारतीय ज्ञान परम्परा को आगे बढ़ाने में योगदान प्रदान करेंगे।

प्रो० (डॉ०) राकेश कुमार आजाद

नमूना • SAMPLE



विभाग प्रमुख
शिक्षक शिक्षा विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज
मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर (उ०प्र०)
पिन – 242226

शुभकामना सन्देश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता और गर्व है कि हमारे विभाग द्वारा आयोजित संगोष्ठी पर आधारित ''भारतीय ज्ञान परम्परा : विकसित भारत की संकल्पना 2047'' शीर्षक से सम्पादित पुस्तक का प्रकाशन हुआ है। यह पुस्तक भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए हमें अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मूल्यों को संयोजित करने का अवसर देती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा न केवल हमारे शास्त्रों, संस्कृत साहित्य और दर्शन में समाहित है, बल्कि यह हमारे जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है। आज जब हम 2047 तक एक विकसित भारत की कल्पना कर रहे हैं, तो यह आवश्यक है कि हम अपनी पारम्परिक ज्ञान परम्परा से प्रेरणा लें और उसे आधुनिक संदर्भ में पुनः स्थापित करें।

मैं इस पुस्तक के सम्पादक डॉ० प्रभात शुक्ल एवं डॉ० राहुल कुमार के प्रति शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ, जिन्होंने इस महत्त्वपूर्ण कार्य को सम्भव बनाया।

प्रो०(डॉ०) मीना शर्मा

SAMPLE

नमूना • SAMPLE





सम्पादक प्राक्कथन

''भारतीय ज्ञान परम्परा : विकसित भारत की संकल्पना 2047'' पुस्तक को पाठकों तक पहुँचाने का यह अवसर गहरी संतुष्टि और कृतज्ञता का अनुभव कराता है। यह पुस्तक उन विद्वान लेखकों और शोधकर्ताओं के मौलिक विचारों का संकलन है, जिन्होंने भारतीय ज्ञान परम्परा और विकसित भारत की भविष्य दृष्टि पर गहन विचार प्रस्तुत किए हैं। इस पुस्तक को उत्कृष्ट बनाने में योगदान देने वाले सभी लेखकों और विषय विशेषज्ञों के प्रति हृदय से धन्यवाद। उनके विद्वत्तापूर्ण लेख और दृष्टिकोण ने पुस्तक को एक सशक्त स्वरूप प्रदान किया। इसके अतिरिक्त, शोध संस्थानों, पुस्तकालयों और सहकर्मियों का भी विशेष आभार, जिन्होंने इस कार्य में अमूल्य सहयोग प्रदान किया। प्रकाशक और प्रिंटिंग टीम के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है, जिनके परिश्रम से यह पुस्तक अपने अंतिम रूप में पाठकों तक पहुँची। साथ ही, उन सभी परिवारजनों, मित्रों और शुभचिंतकों का आभार, जिनका प्रोत्साहन और समर्थन इस कार्य को पूरा करने में सहायक रहा।

आशा है कि यह पुस्तक भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्वपूर्ण आयामों को समझने और विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने में उपयोगी सिद्ध होगी। पाठकों के सुझाव और प्रतिक्रियाएँ इस प्रयास को और अधिक प्रभावी बनाने में प्रेरणास्रोत होंगी।

सम्पादकगण
डॉ. प्रभात शुक्ल
डॉ. राहुल कुमार

नमूना • SAMPLE

विषय सूची

1.	भारतीय ज्ञान परम्परा : प्राचीन से वर्तमान तक गुरु–शिष्य सम्बन्ध *–डॉ. राकेश कुमार आजाद*	1
2.	भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा *–डॉ. मीना शर्मा*	8
3.	भारतीय ज्ञान परम्परा और शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्ध *–डॉ. प्रभात शुक्ल*	14
4.	भारतीय ज्ञान परम्परा एवं गुरू–शिष्य सम्बन्ध *–डॉ. विनीत श्रीवास्तव*	20
5.	भारतीय ज्ञान परम्परा की वाहक गीता एवं शान्ति शिक्षा *–डॉ. शैलजा मिश्रा*	25
6.	भारतीय ज्ञान परम्परा के महान ग्रन्थ उपनिषदों में शैक्षिक तत्त्व *–डॉ. प्रशान्त अग्निहोत्री, डॉ. दिव्या गुप्ता*	33
7.	भारतीय ज्ञान परम्परा में मानवीय मूल्य एवं शान्ति शिक्षा *–डॉ. अरविन्द कुमार शुक्ल*	43
8.	भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक मूल्य *–डॉ. राजकमल दीक्षित*	47
9.	भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित मानवीय मूल्य *–डॉ. बृज निवास*	55
10.	भारतीय ज्ञान परम्परा एवं वैदिक शिक्षा प्रणाली *–डॉ. अखिलेश तिवारी*	61
11.	भारतीय संस्कृति और ज्ञान परम्पराओं का संगम : 2047 तक समृद्ध भारत की ओर *–राम औतार सिंह, डॉ. प्रभात शुक्ल*	73

NCERT • SAMPLE

12. भारतीय ज्ञान परम्परा और मानवीय मूल्यों का उत्थान 80
–राजीव यादव

13. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं विकसित भारत 2047 86
–डॉ. नीरज कुमार

14. भारतीय ज्ञान परम्परा : वैज्ञानिकता और नैतिकता का समन्वय 91
–प्रियंका मिश्रा

15. भारतीय ज्ञान परम्परा में गुरु शिष्य सम्बन्ध 96
–अनुराग मिश्रा

16. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं मानवीय मूल्य 102
–दीपक कुमार शर्मा

17. प्राचीन भारतीय शिक्षा का पुनरुत्थान एवं भारतीय ज्ञान परम्परा 107
–डॉ. गौरव शर्मा

18. भारतीय ज्ञान परम्परा और विकसित भारत 111
–हेमेन्द्र कुमार आर्य

19. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं रजनीश ओशो 117
–नम्रता मिश्रा, डॉ. सुधा शर्मा

20. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं आधुनिक समाज 122
–पंखुरी गुप्ता, रोहित कुमार सिंह

21. आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता 127
–प्रिया शर्मा

22. अनाथालय के बच्चों के लिए सम्भावनाएं एवं चुनौतियाँ (भारतीय ज्ञान परम्परा के विशेष सन्दर्भ में) 132
–रमेश चंद

23. भारतीय ज्ञान परम्परा में 'विश्व कल्याण' की प्रेरणा 143
रंजना यादव
–प्रो. (डॉ.) आर.के. आजाद

24. भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 148
–रश्मि प्रभा आर्य

25. भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शिक्षा व्यवस्था 152
–ऋषिता वर्मा

NOT SAMPLE

26. भारतीय ज्ञान परम्परा और आर्थिक विकास 156
–शिवजीत मिश्रा

27. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं विकसित भारत 161
–उमेश आर्य, रश्मि प्रभा आर्य

28. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं विकसित भारत की संकल्पना में लखीमपुर खीरी जनपद की थारू जनजाति की सहभागिता वर्तमान के विशेष सन्दर्भ में 166
–विवेक दत्त, प्रो. सुनील कुमार

29. भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 172
–अनुराधा यादव

30. भारतीय ज्ञान परम्परा और मानवीय मूल्य 179
–डॉ. मनोज कुमार मिश्रा

31. भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः 2020 विकसित भारत की संकल्पना 185
–अभिषेक दीक्षित, डॉ० राहुल कुमार

32. भारतीय ज्ञान परम्परा–सूचना प्रौद्योगिकी 193
–अंजना गंगवार

33. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता 197
–डॉ. शिव प्रताप सिंह, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार सिंह

34. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा **:** एक समीक्षात्मक अध्ययन 202
–पूजा

35. भारतीय ज्ञान परम्परा में गुरु शिष्य सम्बन्ध 208
–शिवानी सिंह, डॉ. बृज निवास

36. भारतीय ज्ञान परम्परा और सूचना संचार प्रौद्योगिकी 213
–उन्नति देवी, डॉ. बृज निवास

37. भारतीय ज्ञान परम्परा में गुरू–शिष्य सम्बन्ध 218
–डॉ0 गीता शर्मा

SAMPLE

38. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना में भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित शिक्षा का योगदान 226
–डॉ. नीरज गुप्ता

39. भारतीय ज्ञान परम्परा का डिजिटलीकरण और संरक्षण 231
–सुभाष चंद्र पाल

40. Indian Knowledge System in English Literature: An Analytical Study 242
–Dr Archana Chauhan

41. Bharatiya Gyan Parampara & National Education Policy (NEP) 2020 250
–Priya Tikkha, Dr. Kirti Prajapati

42. New Education Policy: 2020 in Reference to Indian Knowledge System 261
–Pratibha Sharma

43. Indian Knowledge Systems and Work-Life Balance in Relation with Reducing Stress Level in Education Professionals 266
–Sudhi Gupta, Dr. Kamla Dixit

नमूना • SAMPLE

1

भारतीय ज्ञान परम्परा : प्राचीन से वर्तमान तक गुरु–शिष्य सम्बन्ध

डॉ. राकेश कुमार आजाद
प्राचार्य
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

सारांश : भारतीय गुरु–शिष्य परम्परा का इतिहास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक समृद्ध और परिवर्तनशील रहा है। प्राचीन भारत में यह परम्परा न केवल बौद्धिक ज्ञान, बल्कि नैतिक, अनुशासनात्मक और आध्यात्मिक विकास को भी बढ़ावा देती थी। मध्यकाल में भक्ति और सूफी परम्पराओं ने गुरु–शिष्य सम्बन्ध को एक आध्यात्मिक आयाम प्रदान किया, जबकि आधुनिक युग में शिक्षा प्रणाली के संस्थागत रूप में बदलाव आया है, जिसमें गुरु शिष्य को न केवल शैक्षिक, बल्कि मानसिक और सामाजिक विकास में भी मार्गदर्शन करता है। आज के डिजिटल युग में, यह परम्परा नए रूपों में शिक्षा का हिस्सा बन चुकी है, जिसमें गुरु–शिष्य का सम्बन्ध आवश्यकता से अधिक सुलभ और व्यक्तिगत हो गया है। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक शिक्षा प्रणालियों में गुरु–शिष्य सम्बन्ध की भूमिका और प्रभाव का विश्लेषण करना है।

भारतीय गुरु–शिष्य परम्परा एक ऐसा अनुपम तंत्र रहा है, जिसने शिक्षा को केवल एक औपचारिक प्रक्रिया के बल्कि, एक गहन और आध्यात्मिक अनुभव के रूप में परिभाषित किया। इसमें गुरु न केवल ज्ञान के प्रदाता रहे, बल्कि शिष्य के जीवन के हर पहलू के संरक्षक भी रहे। शिष्य के लिए गुरु एक आदर्श व्यक्तित्व होते थे, जिनसे वह न केवल शिक्षण, बल्कि आचार–विचार, अनुशासन और जीवन जीने की कला भी सीखता था। इस परम्परा का सबसे बड़ा गुण यह था कि यह शिक्षा को व्यक्तिगत बनाती थी। गुरु प्रत्येक शिष्य की योग्यता और क्षमताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करते थे। इस प्रक्रिया में, शिष्य गुरु के प्रति पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ शैक्षिक जीवन व्यतीत करता था। यह सम्बन्ध केवल ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं था अपितु यह जीवन के मूलभूत सिद्धान्तों और नैतिकता का पालन करने की शिक्षा भी देता था।

प्राचीन भारत के गुरुकुलों में शिष्य गुरु के साथ निवास करते हुए सीखता था। यहाँ शिक्षा में व्यावहारिकता और नैतिकता का विशेष ध्यान रखा जाता था। शिष्यों

को केवल ग्रन्थों का अध्ययन नहीं कराया जाता था, बल्कि उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर और सक्षम बनाया जाता था। यह शिक्षा प्रणाली न केवल व्यक्तिगत विकास का आधार थी, बल्कि सामाजिक सुधार और मानवता की उन्नति का साधन भी थी।

मध्यकालीन काल में इस परम्परा ने एक नया स्वरूप लिया। इस काल में भक्तिकालीन संतों और सूफी गुरुओं ने गुरु–शिष्य सम्बन्ध में अध्यात्म और भक्ति का अद्वितीय मिश्रण प्रस्तुत किया। इस समय, गुरु को ''सद्गुरु'' के रूप में देखा जाने लगा, जो शिष्य को न केवल सांसारिक ज्ञान प्रदान करता था, बल्कि उसे ईश्वर और आत्मज्ञान की राह भी दिखाता था। इस काल में गुरु–शिष्य सम्बन्ध ने धर्म, जाति और भाषा की सीमाओं को पार करते हुए सामाजिक समरसता का संदेश दिया।

आधुनिक युग में, शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी प्रभाव और तकनीकी प्रगति ने गुरु–शिष्य परम्परा के स्वरूप को बदल दिया है। अब शिक्षा संस्थागत हो गई है और गुरु–शिष्य का पारम्परिक व्यक्तिगत सम्बन्ध औपचारिकता में बदल गया है। जैसे ही, तकनीकी माध्यमों ने शिक्षा को व्यापक और सुलभ बनाया है, वैसे ही गुरु–शिष्य के बीच का आत्मीय और घनिष्ठ सम्बन्ध कहीं पीछे छूट गया। फिर भी, आज भी भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरु का सम्मान और शिष्य का समर्पण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आज के डिजिटल युग में, ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म, MOOCs, और वर्चुअल क्लासरूम जैसे माध्यमों ने गुरु–शिष्य सम्बन्ध को नए आयाम दिए हैं। अब शिक्षक एक मार्गदर्शक और संरक्षक के रूप में शिष्य को आत्मनिर्भर बनाने में सहायता करता है। परंतु, आधुनिक युग की चुनौतियों के बीच यह आवश्यक है कि पारम्परिक गुरु–शिष्य परम्परा के मूल तत्त्व, जैसे मूल्य शिक्षा, व्यक्तिगत मार्गदर्शन और आत्मीयता, को संरक्षित रखा जाए। भारतीय गुरु–शिष्य परम्परा एक ऐसा अमूल्य धरोहर है, जो आज भी शिक्षा और समाज को प्रेरणा प्रदान करती है। यह परम्परा हमें यह सिखाती है कि शिक्षा केवल ज्ञान का संग्रह नहीं है, बल्कि यह जीवन का उद्देश्य समझने और उसे सार्थक बनाने की प्रक्रिया है।

प्राचीन कालीन शिक्षा में गुरु–शिष्य सम्बन्धः–

प्राचीन भारत में गुरु–शिष्य सम्बन्ध केवल शिक्षा प्रणाली का एक हिस्सा नहीं था, बल्कि यह समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षक भी था। गुरु को एक मार्गदर्शक, शिक्षक और आध्यात्मिक गुरु के रूप में देखा जाता था, जो शिष्य को न केवल सांसारिक ज्ञान प्रदान करते थे, बल्कि उन्हें जीवन की गहरी समझ और उच्च आध्यात्मिकता की ओर भी प्रेरित करते थे। गुरु और शिष्य के बीच का यह रिश्ता विश्वास, निष्ठा और समर्पण पर आधारित था, जहाँ गुरु शिष्य के जीवन को हर दिशा में संवारने का प्रयास करते थे।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली का मुख्य आधार गुरुकुल था। शिष्य गुरुकुल में अपने गुरु के सान्निध्य में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। यह शिक्षा केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें जीवन कौशल, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारियों का प्रशिक्षण भी शामिल था। गुरुकुल में पढ़ाई एक अनौपचारिक वातावरण में होती थी, जहाँ गुरु और शिष्य के बीच एक गहरा व्यक्तिगत सम्बन्ध विकसित होता था। शिष्य अपने गुरु से वेद, धर्म, दर्शन और व्यावहारिक जीवन कौशल जैसे कृषि, युद्ध कला, संगीत और चिकित्सा जैसे विषयों की शिक्षा प्राप्त करते थे। गुरुकुल में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि शिष्य गुरु के साथ एक परिवार के सदस्य की तरह रहते थे। वे गुरु के दैनिक जीवन का हिस्सा बनते थे, उनकी सेवा करते थे और उनके जीवन के आदर्शों को अपनाते थे। यह सह–अस्तित्व शिक्षा के साथ–साथ नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का भी विकास करता था। शिष्य को यह सिखाया जाता था कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का माध्यम नहीं है, बल्कि समाज और मानवता की सेवा का एक साधन है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं था। यह प्रणाली व्यक्ति के चरित्र निर्माण, आत्मा की उन्नति और समाज के प्रति कर्तव्यों को समझने पर केन्द्रित थी। शिष्य को सिखाया जाता था कि जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक समृद्धि नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक विकास और सत्य की खोज भी है। शिक्षा के माध्यम से शिष्य को ऐसा बनाया जाता था कि वह न केवल एक कुशल व्यक्ति बने, बल्कि एक आदर्श नागरिक भी हो। गुरु–शिष्य सम्बन्ध में गुरु का स्थान अत्यंत उच्च होता था। गुरु को 'ब्रह्मा, विष्णु, महेश' के रूप में देखा जाता था, अर्थात् गुरु ही सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारक हैं। यह दर्शाता है कि गुरु का कार्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि शिष्य के जीवन को सही दिशा में ले जाना भी है। इसी कारण, शिष्य अपने गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा और समर्पण दिखाते थे।

प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली में व्यावहारिक और आध्यात्मिक शिक्षा का अनूठा समन्वय था। शिष्य को न केवल कृषि, युद्ध, गणित और विज्ञान जैसे विषयों का ज्ञान दिया जाता था, बल्कि ध्यान, योग और आध्यात्मिक साधना का भी प्रशिक्षण दिया जाता था। यह शिक्षा प्रणाली शिष्य को एक समग्र और संतुलित व्यक्तित्व बनाने का प्रयास करती थी। प्राचीन काल में गुरु–शिष्य सम्बन्ध केवल शिक्षा तक सीमित नहीं था, यह जीवन का एक पवित्र और सजीव आदर्श था। इसने भारतीय समाज को नैतिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाया और एक ऐसा आधार प्रदान किया, जिस पर भारतीय ज्ञान परम्परा सदियों तक टिकी रही।

मध्यकालीन भारत में गुरु–शिष्य परम्परा का परिवर्तित स्वरूपः–

मध्यकालीन भारत में गुरु–शिष्य परम्परा में कई महत्वपूर्ण परिवर्तनों ने इसका स्वरूप और उद्देश्य बदल दिया। इस समय भारतीय समाज में भक्ति आन्दोलन, सूफी

परम्परा और इस्लामी शिक्षा के प्रभाव से गुरु–शिष्य सम्बन्धों में एक नई दिशा और गहराई आई। इस काल में गुरु–शिष्य सम्बन्ध का ध्यान सिर्फ शैक्षिक ज्ञान तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया बन गया।

भक्ति आन्दोलन ने भारतीय समाज में आध्यात्मिक उन्नति और गुरु–शिष्य परम्परा को नया आयाम दिया। इस आन्दोलन के दौरान संतों और महात्माओं ने गुरु को केवल शिक्षक नहीं, बल्कि ईश्वर का प्रतिनिधि मानते हुए उसकी महिमा का प्रचार किया। गुरु–शिष्य सम्बन्ध अब एक गहरे आध्यात्मिक अनुभव की ओर अग्रसर हुआ, जिसमें भक्ति के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति की दिशा दिखाने का कार्य गुरु ने किया। भक्ति आन्दोलन में गुरु के रूप में व्यक्ति का न केवल धार्मिक मार्गदर्शक बल्कि आध्यात्मिक पथ पर चलने के लिए प्रेरक रूप में भी देखा गया। शिष्य गुरु से न केवल वेद, शास्त्र या कर्मकांड के बारे में शिक्षा प्राप्त करता था, बल्कि वह आत्मा के उद्धार के लिए गुरु के निर्देशों का पालन करता था। गुरु शिष्य को साधना के द्वारा अपने अंतर्मन की गहराईयों में प्रवेश करने की कला सिखाता था और यही कारण था कि गुरु–शिष्य सम्बन्ध इस समय में एक जीवंत और दिव्य रूप ले चुका था।

सूफी परम्परा ने गुरु–शिष्य सम्बन्ध को प्रेम, भक्ति और आत्मसमर्पण के माध्यम से परिभाषित किया। सूफी संतों का मानना था कि गुरु ही शिष्य को ईश्वर के करीब लाने का मार्गदर्शन करता है। वे शिष्य को न केवल आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करते थे, बल्कि उन्हें प्रेम, करुणा और आत्मसमर्पण की भावना भी सिखाते थे। सूफी गुरुओं के अनुसार, केवल बाहरी धार्मिक कर्मों से परे जाकर, गुरु के मार्गदर्शन में शिष्य को ईश्वर के साक्षात्कार के लिए एक साधना की आवश्यकता थी। सूफी गुरुओं के पास शिष्य को आध्यात्मिक मार्गदर्शन देने का एक अद्वितीय तरीका था, जो न केवल ज्ञानात्मक था, बल्कि शिष्य के दिल और आत्मा के स्तर पर असर डालने वाला था। इस परम्परा में गुरु–शिष्य सम्बन्ध को एक रहस्यात्मक और गूढ़ अनुभव के रूप में माना जाता था, जिसमें शिष्य गुरु के माध्यम से आत्मज्ञान की प्राप्ति करता था। इस सम्बन्ध में प्रेम और आत्मसमर्पण की भावना अत्यधिक महत्वपूर्ण थी। शिष्य गुरु के प्रति समर्पण से ही आत्मा का पवित्रीकरण और मोक्ष की प्राप्ति की दिशा में अग्रसर हो सकता था।

मध्यकाल में गुरु–शिष्य सम्बन्ध में और एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ, वह था इसके संस्थागत स्वरूप का उदय। मठ, आश्रम और मदरसे जैसे संस्थानों के माध्यम से गुरु–शिष्य सम्बन्ध औपचारिक और संरचित हो गए। इन संस्थाओं में शिक्षा का उद्देश्य केवल धार्मिक या आध्यात्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं था, बल्कि समाज के उत्थान और सांस्कृतिक उन्नति के लिए शिष्य को तैयार करना था। गुरु–शिष्य सम्बन्ध अब एक व्यवस्था का रूप ले चुका था, जिसमें गुरु अपनी शिष्यों को शैक्षिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह के ज्ञान से सम्पन्न करता था। इन संस्थानों में गुरु का कर्तव्य न केवल शिष्य को शिक्षा देना था, बल्कि उसे अनुशासन, आदर्श

और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझाना भी था। इसके अलावा, गुरु का कार्य शिष्य के नैतिक विकास पर भी था, ताकि वह एक सच्चा और जिम्मेदार व्यक्ति बने। इस प्रकार, मध्यकाल में गुरु–शिष्य सम्बन्ध में जो परिवर्तन हुए, वे न केवल शैक्षिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण थे, बल्कि समाज और संस्कृति के उत्थान में भी योगदान देने वाले थे। गुरु–शिष्य परम्परा इस समय में एक नया आयाम प्राप्त कर चुकी थी, जो अब सिर्फ एक व्यक्तिगत शिक्षा के सम्बन्ध से ऊपर उठकर एक सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया बन गई थी।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में गुरु–शिष्य सम्बन्धः–

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में गुरु–शिष्य सम्बन्ध में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। शिक्षा के स्वरूप में बदलाव के बावजूद, गुरु–शिष्य सम्बन्ध की महत्ता बनी हुई है और इसका प्रभाव आज भी भारतीय समाज में गहरे रूप से देखा जा सकता है। यह सम्बन्ध अब केवल एक शैक्षिक सम्बन्ध तक सीमित नहीं रह गया, बल्कि इसमें मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक पहलू भी जुड़ गए हैं।

आधुनिक शिक्षा में गुरु का रूप पारम्परिक शिक्षक से बदलकर एक मार्गदर्शक, प्रेरक और मानसिक समर्थन देने वाले व्यक्ति का हो गया है। पहले जहाँ गुरु को सिर्फ ज्ञान का स्रोत और शैक्षिक मार्गदर्शक माना जाता था, अब उसका कर्तव्य और भूमिका अधिक विस्तृत हो गई है। शिक्षक अब शिष्यों को केवल शैक्षिक ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन के महत्वपूर्ण पाठ भी पढ़ाते हैं।

शिक्षक का कार्य अब शिष्य के शैक्षिक उत्थान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें शिष्य के मानसिक और भावनात्मक विकास को भी शामिल किया जाता है। शिक्षक शिष्य को आत्मनिर्भर बनाने के साथ–साथ उसे समाज में अपनी भूमिका और जिम्मेदारियों का एहसास कराता है। एक आधुनिक गुरु अब शिष्य के जीवन के मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है और उसे एक अच्छा नागरिक, समाजसेवी और जिम्मेदार व्यक्ति बनाने के लिए प्रेरित करता है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में गुरु–शिष्य सम्बन्ध का प्रभाव समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में भी देखा जा सकता है। गुरु का यह सम्बन्ध केवल व्यक्तिगत स्तर पर शिष्य के विकास तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह पूरे समाज में बदलाव लाने की क्षमता रखता है। गुरु शिष्य को अपने समाज के प्रति संवेदनशील और जागरूक बनाता है, जिससे वह सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों में सक्रिय रूप से भाग लेता है। गुरु–शिष्य सम्बन्ध से शिष्य को केवल शैक्षिक शिक्षा ही नहीं मिलती, बल्कि उसे सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से भी तैयार किया जाता है। शिक्षक शिष्य को समाज की जरूरतों और चुनौतियों के प्रति जागरूक करता है और उसे यह समझाने की कोशिश करता है कि वह समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को कैसे

निभा सकता है। इस प्रकार, गुरु–शिष्य सम्बन्ध शिक्षा को समाज के व्यापक संदर्भ में जोड़ता है और शिष्य को एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करता है।

आज के समय में, गुरु–शिष्य सम्बन्ध में तकनीकी बदलाव आया है, जो इस सम्बन्ध को और अधिक प्रभावशाली और सुलभ बना रहा है। डिजिटल माध्यमों, ऑनलाइन शिक्षा और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग ने गुरु और शिष्य के बीच संवाद का तरीका पूरी तरह से बदल दिया है। आजकल शिष्य गुरु से कहीं से भी और किसी भी समय सम्पर्क कर सकता है, जो शैक्षिक प्रक्रियाओं को और अधिक सुलभ बनाता है। ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने शिष्य को अपनी गति से और अपनी सुविधानुसार शिक्षा प्राप्त करने की स्वतंत्रता दी है। तकनीकी उपकरणों का उपयोग गुरु–शिष्य सम्बन्ध को और अधिक व्यापक और प्रभावशाली बना सकता है, क्योंकि अब शिष्य को किसी भौतिक कक्षा तक सीमित नहीं रहना पड़ता। शिक्षक शिष्य को डिजिटल माध्यम से मार्गदर्शन दे सकता है, जिससे शिष्य का विकास किसी भी समय और कहीं भी हो सकता है। इस प्रकार तकनीकी परिवर्तनों ने गुरु–शिष्य सम्बन्ध को एक नया दृष्टिकोण और दिशा दी है।

निष्कर्ष:–

भारतीय गुरु–शिष्य परम्परा की यात्रा प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक कई बदलावों से गुजरी है, लेकिन इसका मूल उद्देश्य हमेशा शिष्य के समग्र विकास पर ही केन्द्रित रहा है। प्राचीन काल में यह सम्बन्ध अधिक व्यक्तिगत और आध्यात्मिक था, जहाँ गुरु शिष्य को जीवन के गहरे तात्त्विक, नैतिक और आध्यात्मिक पहलुओं से परिचित कराता था। इस समय गुरु का स्थान समाज में अत्यधिक सम्माननीय था और गुरु–शिष्य सम्बन्ध को एक पवित्र और श्रद्धा से भरा हुआ माना जाता था।

मध्यकाल में गुरु–शिष्य परम्परा में भक्ति और सूफी आन्दोलनों का प्रभाव दिखाई दिया, जहाँ गुरु को भगवान के प्रतिनिधि और शिष्य को आध्यात्मिक उन्नति का मार्गदर्शक माना जाता था। इस समय गुरु–शिष्य सम्बन्ध में आध्यात्मिक और धार्मिक तत्त्वों की प्रधानता थी और गुरु का कार्य शिष्य के मानसिक और आत्मिक उन्नति की ओर मार्गदर्शन करना था।

आधुनिक युग में, शिक्षा प्रणाली के संस्थागत रूप में बदलाव आया, लेकिन गुरु–शिष्य सम्बन्ध की अहमियत बनी रही। अब गुरु शिष्य के शैक्षिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास की जिम्मेदारी लेता है। शिक्षक केवल कक्षा में ज्ञान देने वाले व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि वे शिष्य के मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक विकास और सामाजिक जिम्मेदारियों को भी समझाते हैं। इसके साथ ही, तकनीकी उपकरणों के माध्यम से यह सम्बन्ध और भी सुलभ और प्रभावशाली हो गया है। डिजिटल माध्यमों

और ऑनलाइन शिक्षा ने शिष्य को अपनी गति से सीखने का अवसर प्रदान किया है। हालाँकि गुरु–शिष्य सम्बन्ध का स्वरूप बदल चुका है, इसका मूल उद्देश्य 'शिष्य का समग्र विकास' अब भी अपरिवर्तित है। यह परम्परा भारतीय समाज के सांस्कृतिक और शैक्षिक धरोहर के रूप में जीवित है, जो शिष्य को न केवल शैक्षिक ज्ञान, बल्कि जीवन के मूल्य और समाज के प्रति जिम्मेदारी का बोध कराती है। इस परम्परा के माध्यम से शिष्य एक जिम्मेदार और जागरूक नागरिक के रूप में विकसित होता है, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है। अंततः, भारतीय गुरु–शिष्य परम्परा आज भी समाज के नैतिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक विकास में एक अहम भूमिका निभा रही है। यह परम्परा आज भी शिक्षा के एक प्रेरणास्त्रोत के रूप में कार्य करती है और समाज में ज्ञान, अनुशासन और मानवता के मूल्यों को प्रोत्साहित करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. शंकराचार्य, आदि (1998). गुरु–शिष्य सम्बन्ध : भारतीय ज्ञान परम्परा में एक पवित्र सम्बन्ध. हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन।
2. प्रकाश, सोम (2015). मध्यकालीन भारत में गुरु–शिष्य परम्परा और उसका सामाजिक प्रभाव. समाजशास्त्र विश्वविद्यालय प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. दीक्षित, शशि (2016). डिजिटल युग में गुरु–शिष्य सम्बन्धः एक नई दिशा. *शिक्षण और तकनीकी विकास पत्रिका*, 11(4), 245–259।
4. नायक, दिलीप (2018). गुरु–शिष्य सम्बन्ध और सामाजिक सुधारः एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण. भारतीय समाजशास्त्र परिषद, पुणे।

2

भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा

डॉ. मीना शर्मा
आचार्य, शिक्षक–शिक्षा विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

सारांश : भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण संरक्षण की गहरी अवधारणा है, जो न केवल आध्यात्मिकता से जुड़ी है बल्कि मानवीय और सामाजिक जीवन का भी अभिन्न हिस्सा है। भारतीय धर्मग्रन्थों जैसे वेद, उपनिषद्, महाकाव्य और पुराणों में प्रकृति के प्रति सम्मान और उसके संरक्षण की अनेक शिक्षाएँ दी गई हैं। यह सिद्धान्त मनुष्य को प्रकृति के साथ सह–अस्तित्त्व में रहने और उसे संरक्षित रखने की प्रेरणा देते हैं। प्रस्तुत शोध लेख में भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रमुख धर्म ग्रन्थों में निहित पर्यावरण चेतना, पर्यावरण संरक्षण की वैदिक विश्वदृष्टि, पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रमुख वैदिक अवधाराणाओं सहित उत्तर वैदिक ग्रन्थों में पर्यावरण नैतिकता की अवधारणा को प्रदर्शित किया गया है। साथ ही भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुसार पंच महाभूतों तथा पर्यावरण के संरक्षण हेतु कुछ प्रमुख आदतों को बिन्दुवार सुझाया गया है।

परिचयः–

हमारे भारत देश की संस्कृति ने दुनिया को अलग–अलग देशों के रूप में नहीं माना वरन् 'वसुधैव कुटुम्बकम्' स्वरूप सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में स्वीकारा है। इस पावन भूमि की अविरल ज्ञान धारा ने सम्पूर्ण विश्व को अभिसिंचित किया है। भारत की ज्ञान परम्परा, विश्व की समृद्ध विरासतों में से एक है। इसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण संरक्षण की गहरी अवधारणा है, जो न केवल आध्यात्मिकता से जुड़ी है बल्कि मानवीय और सामाजिक जीवन का भी अभिन्न हिस्सा है। भारतीय धर्मग्रन्थों जैसे वेद, उपनिषद्, महाकाव्य और पुराणों में प्रकृति के प्रति सम्मान और उसके संरक्षण की अनेक शिक्षाएँ दी गई हैं। यह सिद्धान्त मनुष्य को प्रकृति के साथ सह–अस्तित्त्व में रहने और उसे संरक्षित रखने की प्रेरणा देते हैं।

भारतीय संस्कृति सदा से ही पर्यावरण संरक्षण की पोषक रही है। पर्यावरण का शोषण करना नहीं, बल्कि दोहन और पोषण करना हमारी संस्कृति का आधार रहा